ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

विवि के इलाहाबाद केंद्र में 'भाषा, मीडिया और बाज़ार' पर गोष्ठी का आयोजन

भाषा की जीवंतता के लिए प्रयोग आवश्यक –प्रो. निर्मला जैन

मंचासीन कुलपति विभूति नारायण राय, प्रो. गंगा प्रसाद विमल, प्रो. निर्मला जैन, प्रो. उमाशंकर उपाध्याय तथा प्रो. राम प्रकाश सक्सेना

गोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में विचार रखते हुए कुलपति विभूति नारायण राय

भाषा बहता नीर है, भाषा स्थिर नहीं होती उसमें सतत प्रवाह होता है। भाषा के विकास के लिए परिवर्तन आवश्यक शर्त है। भाषा में हो रहे परिवर्तनों से भयभीत नहीं होना चाहिए। प्रयोग के स्तर पर भाषा अनेक भंगिमाओं के साथ सामने आती है। भाषा को हम कितना महत्वपूर्ण मानते हैं इस पर संवेदनशीलता के साथ विचार होना चाहिए। भाषा के प्रयोगों में बाजार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मीडिया के जितने रूप होंगे भाषा भी उतनी तरह की मिलेगी। **'छूना मत छाया'** की प्रवृत्ति से हमें बचना होगा। बाजार के विज्ञापन के साथ सर्जनात्मकता भी आती है, यह हमें नहीं भूलना चाहिए। हिंदी ने बाजार के सहारे विस्तार पाया है, आज विश्व स्तर पर पाँच सौ हिंदी चेयर कार्यरत हैं। हिंदी के अनेक **'शेड्स'** सामने आयेंगे। **'भाषा, मीडिया और बाज़ार'** विषय पर केंद्रित इस गोष्ठी के माध्यम से बहुत महत्वपूर्ण सवाल सामने आये हैं। जैसे कि बम्बईया हिंदी के छह रूप **'कुरू कुरू स्वाहा'** में देखे जा सकते हैं। उक्त बातें महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केंद्र, इलाहाबाद द्वारा आयोजित गोष्ठी में कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए **प्रो. निर्मला जैन** ने कहीं।

गोष्ठी के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति एवं कथाकार **श्री विभूति नारायण राय** ने कहा कि किसी भी भाषा की सर्वग्राही प्रकृति उसके विकास में मदद करती है। संस्कृत भाषा व्याकरण की जकड़बंदी के कारण आमजन की भाषा नहीं बन पाई। हिंदी के विकास में भारत का मध्य वर्ग और बाजार बड़ी भूमिका अदा कर रहा है, मीडिया भाषा को नया तेवर दे रहा है और हिंदी को बाजार की ताकत आगे लिए जा रही है क्या कारण है कि आज हिंदी पढ़ने के लिए अधिकतर छात्र चीन से आ रहे हैं। हमें बाज़ार और मीडिया की केवल नकारात्मक छवि ही नहीं देखना चाहिए। दिल्ली के कथाकार एवं कवि **गंगा प्रसाद विमल** ने कहा कि बाज़ार अपनी भाषा गढ़ता है। भाषा के साथ सुलूक व्यापारिक प्रतिस्पर्धा से तय होता है। नवसाम्राज्यवाद विश्व स्तर पर भाषाओं के साथ एक जैसा व्यवहार करता है,

उसकी बारीकी से पहचान होनी चाहिए। अन्य वक्ता हिंदी विश्वविद्यायल के भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता **प्रो. उमाशंकर उपाध्याय** ने कहा कि बाजार समाज का अमानवीयकरण कर रहा है। मानवीय संबंध खत्म हो रहे हैं, जब सबकुछ संकट में है तो भाषा भी है। नागपुर के **प्रो.रामप्रकाश सक्सेना** ने हिंदी शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से अपनी बात कही। विषय की प्रस्तावना रखते हुए **श्री धनंजय चोपड़ा** ने कहा कि भाषा में जातीय अनुगूंज गायब हो रही है। भाषा का अनुकूलन किया जा रहा है। मीडिया से हमारे हिस्से की खबर गायब हो रही हैं। गोष्ठी का संयोजन एवं संचालन क्षेत्रीय केंद्र के प्रभारी **प्रो. संतोष भदौरिया** द्वारा किया गया तथा अतिथियों का स्वागत **प्रो. वी.रा.जगन्नाथन** ने किया।

गोष्ठी में प्रमुख रूप से ए.ए. फातमी, अजित पुष्कल, बी.एन. सिंह, अनिल रंजन भौमिक, अनुपम आनन्द, के.के. पाण्डेय, जयकृष्ण राय तुषार, रविरंजन सिंह, अनिल सिद्धार्थ, नीलाभ राय हिमाशु रंजन, सुरेन्द्र वर्मा, नन्दल हितैषी, अशोक सिद्धार्थ, रेनू सिंह, संजय पाण्डेय, अनिल भदौरिया, सुरेन्द्र राही सहित साहित्य प्रेमी उपस्थित थे।

बी. एस. मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी